

गंगा डॉल्फनि

गंगा डॉल्फिनि

(*Platanista gangetica gangetica*)

तथ्य

- मीठे पानी में ही रह सकती हैं; गहरे पानी को क्यादा प्राप्तिमिकता देती हैं
- सामान्यतः अंधी होती हैं; अल्ट्रासोनिक ध्वनि उत्सर्जित करके शिकार करती हैं
- पानी में राँस नहीं ले सकती; राँस लेने के लिये प्रत्येक 30-120 सेकंड में सतह पर आती हैं
- राँस लेने के दौरान निकलने वाली आवाज के कारण इन्हें 'सुसु' भी कहा जाता है

अधिवास एवं वितरण

- भारत, नेपाल और बांग्लादेश की गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों में वितरिता
- भारत के 7 राज्यों असम, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल में इनकी उत्थिति देखी जा सकती है।

संरक्षण की स्थिति

- IUCN रेड लिस्ट: संकटभाग्य (endangered)
- CITES: परिशेष I
- भारतीय बन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972- अनुसूची-I

खतरे

- आवास की क्षति
- प्रदूषण
- वायाकैच
- जलवायु परिवर्तन
- शिकार

संरक्षण संबंधी प्रयास

- प्रोजेक्ट डॉल्फिन (2021): प्रोजेक्ट टाइगर की तर्फ पर
- नेशनल डॉफिन रिसर्च सेंटर (2021): पटना विश्वविद्यालय (बिहार) में, भारत और एशिया का पहला
- सार्वजनिक डॉल्फिन अभ्यारण्य:
 - विक्रमशिला अभ्यारण्य (बिहार) - 1991
 - छठितनापुर अभ्यारण्य (उत्तरप्रदेश) - प्रस्तावित

